सौर ऊर्जा से उड़ता विमान

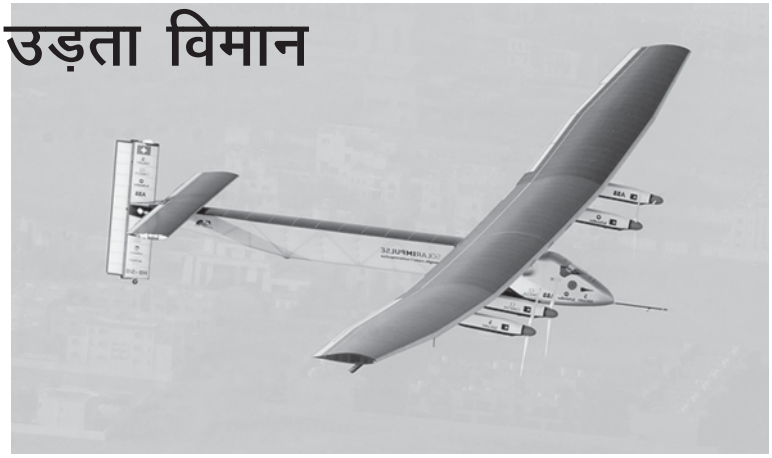

दशकों की तैयारी के बाद अंततः एक ऐसा वायुयान हमारे सामने है जो मात्र सूरज की रोशनी से चलता है। जी हां, इसमें पेट्रोल वगैरह का उपयोग नहीं होता। सोलर इम्पल्स 2 नामक इस वायुयान ने पिछले दिनों संयुक्त अरब अमीरात में आबूधाबी से लेकर मस्कट तक की उड़ानें पूरी की। यह सोलर इम्पल्स की महत्वाकांक्षी उड़ान का पहला चरण था जिसके तहत यह धरती का पूरा चक्कर लगाने वाला है। मस्कट के बाद अगला पड़ाव अहमदाबाद था और उसके बाद वाराणसी। अगले पांच महीनों में यह धरती का चक्कर लगाकर जुलाई में वापिस अपने मूल स्थान पर उतरेगा।

इस वायुयान के आविष्कारक आंद्रे बोर्शबर्ग और बर्ट्रैण्ड पिकार्ड बारी-बारी से इसे उड़ाएंगे और 12 उड़ानें पूरी करेंगे। बताया जाता है कि इनके उड़ने की गति 50-100 किलोमीटर प्रति घंटा रहेगी। वायुयान का वज़न मात्र 2300 किलोग्राम है मगर इसके डैने किसी बोइंग विमान से भी ज़्यादा बड़े हैं। कुल 72 मीटर चौड़े इन डैनों पर 17 हज़ार से ज़्यादा सौर सेल्स लगी हैं और यही इसे उड़ने की शक्ति प्रदान करती हैं। ये सेल्स चार लीथियम बैटरियों को चार्ज कर देती हैं जिनकी बदौलत यह रात में भी (जब धूप न हो) उड़ सकता है।

सोलर इम्पल्स के लिए उड़ान का सबसे मुश्किल हिस्सा तो तब आएगा जब यह अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को पार करेगा। इनमें से प्रत्येक महासागर को पार करने में इसे पांच-पांच दिन का समय लगने का अनुमान है। ज़ाहिर है इस दौरान इसे रात को भी उड़ना पड़ेगा। लगातार इतनी लंबी उड़ानों के लिए दोनों पायलट्स ने विशेष प्रशिक्षण भी लिया है। सोलर इम्पल्स का मूल विचार ऐसी टेक्नॉलॉजी को बढ़ावा देना है जो पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल हों। ***(स्रोत फीचर्स)***